विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 23 : अंक 41 : नई दिल्ली : 5-11 जनवरी 2018

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

मंगलं मतिमान् भिक्षुः, मंगलं भारमल्लकः।
मंगलं रायचन्द्राद्याः, मंगलं तुलसी गुरू।।

महाप्रज्ञोऽस्तु मंगलम्।। महाश्रमणोऽस्तु मंगलम्।। तेरापंथोऽस्तु मंगलम्।।

सुधी पाठको!

सादर जय जिनेन्द्र। नववर्ष मंगलमय हो। सन् २०१८ का शुभारम्भ संस्था शिरोमणि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए एक नई सौगात लेकर आया है। 'विज्ञप्ति' के स्वर्ण जयंती वर्ष के प्रारम्भ से ही महासभा इसका प्रकाशन प्रारम्भ कर अत्यंत गौरव और सौभाग्य का अनुभव कर रही है। 'तेरापंथ धर्मसंघ का गजट' कही जाने वाली इस पत्रिका के प्रकाशन का महनीय दायित्व महासभा को मिला, यह परम पूज्य एकादशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण का ही आशीर्वाद है। आपश्री की कृपा से ही महासभा को तेरापंथ समाज की 'मां' और 'संस्था शिरोमणि' जैसे गौरवास्पद विरुद प्राप्त हुए हैं।

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के शासनकाल में जनवरी १९६९ से आरम्भ हुई 'विज्ञप्ति' के पचासवें वर्ष का प्रथम अंक तेरापंथी महासभा द्वारा प्रकाशित हुआ है। इससे पूर्व आदर्श साहित्य संघ ने निरंतर ४९ वर्षों तक इस साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन किया। लगभग आधी सदी की इस यात्रा को अव्याबाध जारी रखने के लिए संपूर्ण आदर्श साहित्य संघ परिवार बधाई और साधुवाद का पात्र है। आचार्यत्रयी के आशीर्वाद से प्राप्त हुई यह उपलब्धि विज्ञप्ति की आगामी यात्रा के संदर्भ में महासभा के लिए आदर्श और प्रेरणा रहेगी।

'ब्लैक एण्ड व्हाईट' रूप में प्रकाशित होने वाली 'विज्ञप्ति' जितनी सादगीपूर्ण है, इसकी सामग्री उतनी ही विशिष्ट और विश्वसनीय है। धर्मसंघ की सबसे प्राचीन संस्था महासभा के लिए और अधिक गौरव का विषय है कि धर्मसंघ की सबसे प्राचीन पत्रिका 'जैन भारती' का दायित्व प्रारम्भ से ही महासभा को प्राप्त है। अब विज्ञप्ति के रूप में तेरापंथ समाज की सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रतिष्ठित पत्रिका के प्रकाशन का दायित्व भी कल्याण परिषद के निर्णयानुसार महासभा को प्राप्त हो गया है। धर्मसंघ की दो-दो धरोहरों के संरक्षण और संवर्धन का दायित्व महासभा परिवार को सचमुच गर्व की अनुभूति करा रहा है।

दायित्व स्वीकरण के इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर महासभा परिवार स्वयं के लिए यही मंगलकामना करता है कि परम पूज्य आचार्यप्रवर का कृपापूर्ण वरदहस्त महासभा पर सदा सतत बना रहे और उसकी छांव तले महासभा और महासभा द्वारा प्रकाशित 'विज्ञप्ति' का स्वरूप निरंतर निखरता रहे। मात्र पाठकों का ही नहीं, अपितु संपूर्ण तेरापंथ समाज का विश्वास, सम्मान, सहयोग और समादर विज्ञप्ति को हमेशा प्राप्त रहा है। नए दौर में वह निरंतर प्रवर्धमान रहे।

किशनलाल डागलिया
अध्यक्ष

प्रफुल्ल बेताला
महामंत्री

स्वागत हे अतिथि महानो!

२६ दिसम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः पडिया से जशीपुर के लिए प्रस्थान किया। आज का

विहारपथ भी कल की भांति जंगल के बीच बना हुआ था। दोनों ओर स्थित पर्वतों और उन पर अवस्थिति लिए हुए हजारों सघन वृक्षों से यह पथ रमणीय बना हुआ था। ओस से आर्द्र बने पेड़ों के पत्तों पर जब सूर्य की किरणें गिर रही थीं तो वे द्युतिमान बनते जा रहे थे। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था मानों पर्वत पर हजारों श्वेत बल्ब जगा दिए गए हों। पर्वतीय क्षेत्र में बना यह पथ आरोह-अवरोह से युक्त और कुछ घुमावदार था, किन्तु पूज्यप्रवर का समत्व भाव उससे अप्रभावित था।

मार्गस्थ मौजीगांव और महार्दा के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। महार्दा स्थित पलसा मॉडल स्कूल के विद्यार्थी अपने विद्यालय के बाहर पूज्यप्रवर के स्वागत में कतारबद्ध और करबद्ध खड़े थे। पूज्यप्रवर अपने चरण थामकर कुछ क्षण के लिए वहां विराजमान हुए। विद्यार्थियों ने ओडिया भाषा में स्वागत गीत का संगान किया--

'स्वागत हे अतिथि महानो!
घेणो आमारो अभिनन्दन
तुमो आगमन गांऊं छूं वंदना गीति'

आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार मुख्यमुनिश्री ने उन्हें अहिंसा यात्रा के संकल्प करवाए। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान करते हुए मंगलपाठ सुनाया। करीब १६.० किमी का विहार कर आचार्यप्रवर जशीपुर गर्ल्स हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के मुख्य द्वार पर कतारबद्ध बद्धांजलि खड़े विद्यार्थियों ने शंखनाद और जयघोषों से पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में हेय, ज्ञेय और उपादेय की चर्चा करते हुए दुर्गुणों को छोड़ने व सद्गुणों को ग्रहण करने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान कर उपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अन्य ग्रामीणों को संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई।

हाइस्कूल के प्रभारी प्रधानाध्यापक श्री मंगलूराम ने कहा--'हमारे लिए अत्यंत सौभाग्य की बात है कि हमारे परिसर में ऐसे महान गुरुजी के चरण टिके। मैं संपूर्ण विद्यालय परिवार की ओर से आचार्यश्री महाश्रमणजी का अभिनन्दन करता हूं। अवकाश होने के कारण हमारे अधिकांश विद्यार्थी आपकी वाणी का लाभ नहीं उठा ले पाए, इसका मुझे बहुत खेद रहेगा। आपकी यात्रा सफलतम बने, जगन्नाथ प्रभु से यही प्रार्थना करता हूं।'

आज जशीपुर प्रखंड विकास अधिकारी (बीडीओ) श्री योगेश्वर नायक तथा एबीडीओ श्री बाबाजी नायक ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

राष्ट्रीय अभयारण्य के परिपार्श्व से गतिमान शांतिदूत की अहिंसा यात्रा

२७ दिसम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः जशीपुर से बकरतला की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती कल्याणी नदी पर बना हुआ पुल पूज्यचरणों से पावन बना। विहार के दौरान अगारापड़ा के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। अगारापड़ा स्थित ब्वाय एंड गर्ल्स एजुकेशन कॉम्पलेक्स की छात्राएं अपने विद्यालय के निकट पूज्यप्रवर के स्वागतार्थ खड़ी थीं। पूज्यप्रवर उनके सम्मुख विराजमान हुए। छात्राओं ने आचार्यप्रवर के स्वागत में ओडिया भाषा में गीत का संगान किया। आचार्यप्रवर के इंगितानुसार मुख्यमुनिश्री ने उन्हें अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार करवाए। आज का विहार पथ भी वन के बीच निर्मित था। हजारों वृक्षों से रमणीय बना हुआ यह पथ प्रकृतिप्रिय मानव को लुभाने में सक्षम था।

मार्ग के परिपार्श्वस्थ सिमलीपाल राष्ट्रीय अभयारण्य (टाइगर रिजर्व) के विषय में बताया गया कि इस राष्ट्रीय उद्यान का नाम सेमल या लाल कपास के पेड़ों की वजह से पड़ा है, जो यहां बहुतायत में पाए जाते हैं। यह पार्क ८४५.७० वर्ग किलोमीटर (३२६.५३ वर्ग मील) के क्षेत्र में फैला हुआ है। इस पार्क में जोरांडा और बरेहीपानी जैसे मनहारी झरने हैं। यहां करीब ९९ बाघ ४३२ हाथियों के अलावा अन्य वन्य कई प्राणियों की प्रजातियां भी निवास करती हैं। मयूरभंज राज्य के पूर्ववर्ती शासकों का यह शिकार स्थल प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत शामिल किया गया है। १९५६ में इसका चयन आधिकारिक रूप से टाइगर रिजर्व के लिए किया गया था। घने जंगलों, झरनों और पहाड़ियों से समृद्ध इस पार्क में विविध वन्य जीवों को नजदीकी से देखा जा सकता है। इन वन्य जीवों को देखने के लिए पर्यटक प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में आते हैं। पर्यटकों के भ्रमण के लिए यहां वाहनों की व्यवस्था है।

करीब १५.६ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर बकरतला में स्थित बकरतला न्यू गवर्नमेंट हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के मुख्य द्वार के निकट कतारबद्ध खड़े विद्यार्थियों और शिक्षकों ने पूज्यप्रवर का सादर स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कर्मवाद की चर्चा करते हुए पापकर्मों से बचने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से शिक्षकों व अन्य ग्रामीणों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री भागवत महंत ने कहा--'सम्मानीय पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पधारने से आज केवल हमारे विद्यालय को ही नहीं, अपितु हमारे पूरे इलाके को एक सुनहरा मौका मिला है। आज हम अपने आपको बहुत धन्य और सौभाग्यशाली महसूस कर रहे हैं। क्योंकि आपकी पदरज से हमारी धरती पावन हो गई। आपकी इस अहिंसा यात्रा के प्रति शुभकामना करते हुए मैं सभी लोगों को आह्वान करता हूं कि वे इस महान यात्रा से जुड़ें और लाभ प्राप्त करें। आपकी यह यात्रा संपूर्ण राष्ट्र में पहुंचे और जन-जन का हृदय परिवर्तित कर एक नए समाज का निर्माण करे।'

करंजिया में जैनेतर समाज द्वारा शांतिदूत का भव्य स्वागत

२८ दिसम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः बकरतला से करंजिया की ओर प्रस्थान किया। हालांकि राजस्थान आदि प्रदेशों की अपेक्षा इस क्षेत्र में सर्दी बहुत ही कम है, फिर भी वह आज कुछ अपने रंग में थी। हवा का प्रवाह सर्दी की वर्धमानता में सहायक बना हुआ था। वन्य सघन वृक्षों के कारण विहार पथ का कुछ हिस्सा तो सूर्योदय के काफी देर बाद भी सूर्य रश्मियों के स्पर्श से अछूता बना रहा, आतप को सर्दी का स्थान लेने में कुछ ज्यादा समय लगा। मार्गवर्ती सासबली के ग्रामीणों को पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

पूज्यप्रवर के करंजिया पदार्पण के संदर्भ में करंजिया जैनेतर समाज में अतिशय उल्लास और उमंग का वातावरण था। बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति और उनके उत्साह को देखकर यह कहना कठिन था कि यहां एक भी श्रद्धालु परिवार निवासित नहीं है। स्थानीय विधायक श्री विजय नाइक और सब कलक्टर श्री शरद पुरोहित कई किलोमीटर पूर्व पूज्यप्रवर की अगवानी में पहुंचे और काफी दूर तक पैदल साथ चले। अग्रवाल समाज के लोगों का पूज्यप्रवर के प्रति भक्ति भाव विशेष रूप से उल्लेखनीय था। वे लोग न केवल अहिंसा यात्रा के व्यवस्थाओं में संलग्न थे, अपितु स्वागत जुलूस में भी उनकी उपस्थिति अच्छी संख्या में थी। उनके मुख से प्रस्फुटित होने वाले जयघोष उनकी आंतरिक प्रसन्नता की अभिव्यक्ति के साधन बने हुए थे। उन लोगों के प्रयासों से अन्य लोग भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। साईं सेवा संघ, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी

आश्रम, जयगुरु आश्रम, मारवाड़ी युवा मंच, शक्ति सेवा ट्रस्ट, प्रेस क्लब, करंजिया नागरिक परिषद, परमेश्वरलाल कल्याण सेवा ट्रस्ट से जुड़े लोग तथा करंजिया हाइस्कूल व करंजिया अंचल एकल विद्यालय के सैंकड़ों विद्यार्थी भी स्वागत जुलूस में सोत्साह संभागिता लिए हुए थे। डिस्ट्रिक हॉस्पीटल के समीप सब डिविजनल मेडिकल ऑफिसर श्री प्रदीप कुमार मिश्र ने अपने सहकर्मियों के साथ पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। विभिन्न संस्थाओं के द्वारा आचार्यप्रवर के स्वागत में लगाए गए स्वागत द्वार उन संस्थाओं से संबद्ध कार्यकर्ताओं के आंतरिक श्रद्धाभावों को मुखर कर रहे थे।

करीब १४.७ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर करंजिया के श्री राणी सती मंदिर में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में अपने स्वीकृत शुद्ध धर्मगुरु, धर्माचार्य के प्रति विनम्र, श्रद्धाशील और समर्पित रहने हेतु उत्प्रेरित किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित करंजिया के जैनेतर लोगों ने पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा की अवगति प्राप्त कर प्रतिज्ञात्रयी स्वीकार की।

करंजिया मारवाड़ी समाज की ओर से श्री विष्णु कुमार अग्रवाल ने कहा--'आज हमारे करंजिया की भूमि तेरापंथ के ग्यारहवें आचार्यश्री महाश्रमणजी के आगमन से पावन हो गई है। जैसे सबरी के घर राम पधारे और वह उनके दर्शन से धन्य हो गई, वैसे ही आचार्यश्री के यहां आगमन से हम सभी धन्य हो गए। हमें आज अपार हर्ष हो रहा है। गुरुजी! हम करंजियावासी आपसे प्राप्त तीनों संकल्पों का पालन अवश्य करेंगे और जो यहां उपस्थित नहीं हो पाएं हैं, उन्हें इन संकल्पों को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करेंगे।

सब कलक्टर श्री शरद पुरोहित ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए मैं स्वयं को अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। आपकी वाणी सुनकर मैं धन्य हो गया। आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं अपने जीवन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का पालन करूंगा। करंजिया के सभी नागरिकों से भी मेरा नम्र निवेदन है कि आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्पों को ग्रहण कर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाएं।'

करंजिया विधायक श्री विजयकुमार नाइक ने कहा--'मैं अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी का मां किचेश्वरी की धरती करंजिया की समस्त जनता की ओर से स्वागत व अभिनन्दन करता हूं। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आचार्यश्री ने ४२,००० किलोमीटर की यात्रा पूरी कर ली है। अहिंसा यात्रा के तीनों उद्देश्य सुन्दर और शांत जीवन के आधार बन सकते हैं। आचार्यश्री की यह महान पदयात्रा अपने उद्देश्यों में शत प्रतिशत सुफल बने तथा आपकी इस यात्रा से हमारे अंचल की समस्त जनता लाभान्वित हो।'

एकल अभियान के अध्यक्ष श्री मनसुख सेठिया ने भी पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। एकल विद्यालय के विद्यार्थियों ने ओड़िया भाषा में गीत का संगान किया। कटक मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मोहनलाल सिंघी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में रेवेन्यू ऑफिसर श्री अभिमन्यु मलिक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में करंजिया के लोग सैंकड़ों की संख्या में उपस्थित थे। पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ करंजिया के नागरिकों के आने का तांता आज प्रायः दिन भर लगा रहा। रात्रिकालीन कार्यक्रम में भी आज जैनेतर समाज की अच्छी उपस्थिति थी।

दूसरों का कल्याण करो, अपना कल्याण होगा

२६ दिसम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः करंजिया स्थित राणी सती मंदिर से स्वामपटना

की ओर प्रस्थान किया। आचार्यप्रवर ने परिसर में स्थित श्री राणी सती दादीजी मंदिर, हनुमान मंदिर व शिव मंदिर में मंगलपाठ उच्चरित किया। विहार के दौरान देव नदी पर बना पुल आचार्यप्रवर के चरणस्पर्श से पावन बना। 'सारपाड़ा', 'हल्दीघाट', 'खजूडीहा' और 'धानबेणी'--इन गांवों के ग्राम्यजनों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। हल्दीघाट और खजूडीहा में ग्रामीण लोग आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ स्थान-स्थान पर समूह रूप में खड़े थे। पूज्यप्रवर के निकट पधारते ही उन भावाभिभूत लोगों ने आचार्यप्रवर के सम्मुख वंदन की मुद्रा में बैठकर पूज्यप्रवर को सविनय वंदन किया। आचार्यप्रवर ने सबको मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। कई लोगों ने आचार्यप्रवर की मनहारी छवि को अपने मोबाइल के कैमरे में भी संजोया।

आज का विहार प्रलंब था, इसलिए विहार के मध्य कुछ समय रुकने का निर्णय किया गया। तदनुसार पूज्यप्रवर धानबेणी में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय में पधारे। पूज्यप्रवर का आज का प्रातराश यहीं था।

प्रातराश के उपरान्त पूज्यप्रवर धानबेणी से प्रस्थित हुए। मार्गस्थ बड़ाघरना के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। वैतरणी नदी पर बने पुल से पूज्यप्रवर इस पार पधारे। पूज्यप्रवर ने विहार के दौरान मयूरभंज जिले से क्योंझर जिले में प्रवेश किया। करीब ११.४० बजे आचार्यप्रवर कुल लगभग १८.१ कि.मी. तथा धानबेणी से करीब ३.५ कि.मी. का विहार कर स्वामपटना स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में परोपकार का महत्त्व है। जो आदमी दूसरों को इरादतन रूप में दुःख देता है, मानना चाहिए कि वह अपने लिए दुःख तैयार कर रहा है। जो आदमी दूसरों का कल्याण करता है, वह मानों अपना कल्याण करता है। आदमी दूसरों को दुर्भावना से दुःख देने का प्रयास न करे, यह काम्य है। उसे यथासंभव स्व-परकल्याण का प्रयास करना चाहिए। दूसरों की आत्मा का कल्याण करना भी धर्म है।'

हर दृष्टि से नुकसानदेह है क्रोध

३० दिसम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः स्वामपटना से टिकिरा की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में कुंआपसी और मौलीपोसी गांव के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। मार्ग के परिपार्श्व में यत्र-तत्र 'बेरों' के ढेर लगे हुए थे। मध्यम आकार ये बेर संभवतया वन्य वृक्षों से प्राप्त हैं। आज का विहार भी कल की भांति प्रलंब था तो कल की तरह ही आज भी मार्ग में कुछ समय रुकने का क्रम रहा। पूज्यप्रवर 'मुद्राबेडा' गांव में मार्ग से कुछ भीतर स्थित बालमुकुली एम.ई. स्कूल में पधारे। आज का प्रातराश यहीं हुआ। प्रातराश के कुछ समय उपरान्त आचार्यप्रवर पुनः प्रस्थित हुए। तब तक सूर्य ने प्रखर रूप धारण कर लिया था। सम्मुखीन सूर्य के आतप को सहते हुए यह अनुमान करना भी कठिन हो रहा था कि अभी दिसम्बर माह चल रहा है। सीता नदी पर बना पुल पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बना। लगभग ११.३० बजे पूज्यप्रवर कुल करीब १७.६ किमी तथा मुद्राबेडा से ५.३ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर टिकिरा स्थित ओड़िशा आदर्श विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में एक कमजोरी होती है--गुस्सा। न चाहते हुए भी कई बार गुस्सा आ धमकता है। कभी-कभी तो वह इतना उग्र रूप धारण कर लेता है कि आदमी न सोचने की बात सोच लेता है, न बोलने की बात बोल लेता है और न करने का कार्य कर लेता है। जो गुस्सा करता है और जिस पर गुस्सा किया जाता है, दोनों ही परेशान हो सकते हैं। लगभग किसी भी क्षेत्र में गुस्सा काम का नहीं होता। परिवार में गुस्सा

होगा, तो कलह हो सकेगा। व्यापार में गुस्सा बाधक बन सकता है। समाज में ज्यादा गुस्सा करने वाले व्यक्ति को प्रतिष्ठा कैसे प्राप्त हो सकेगी। अध्यात्म की दृष्टि से वह नुकसानदेह है ही। आदमी को यथौचित्य गुस्से को उपशांत करने का प्रयत्न करना चाहिए। पुरुषार्थ करने से गुस्से पर नियंत्रण करने में सफलता प्राप्त हो सकती है।

आदमी प्रयास के द्वारा उसे कम कर सकता है। वह चिंतन करे कि आखिर गुस्सा क्यों करूं। यदि कोई मेरी वास्तविक गलती बता रहा है तो उस पर गुस्सा क्यों करूं। यदि वस्तुतः गलती है तो उसके परिष्कार का प्रयास करूं। यदि कोई गलती न होने पर भी गलती बता रहा है तो मैं उसकी बात पर ध्यान ही क्यों दूं? इस प्रकार चिंतन से गुस्से पर नियंत्रण किया जा सकता है। आदमी को ज्यादा गुस्सा आता हो तो 'उवसमेण हणे कोहं' इस आगम सूक्त का एक वर्ष तक प्रतिदिन प्रातः प्रातराश करने से पूर्व लगभग दस मिनट तक जप कर लेना चाहिए। गुस्सा आए तो कुछ समय मौन कर लेना चाहिए या जिस स्थान पर किसी कारण से गुस्सा आ रहा है तो उस स्थान को कुछ समय के लिए छोड़ देना चाहिए तथा जब गुस्सा आए तब श्वास को कुछ लंबा करने का प्रयास कर लेना चाहिए। इस प्रकार गुस्से को शांत करने का प्रयास करना चाहिए।'

मोह को छोड़ो, मोक्ष की ओर बढ़ सकोगे

३१ दिसम्बर। सन् २०१७ का अंतिम दिन। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः टिकिरा से घटगांव की ओर प्रस्थान किया। गत दिनों की अपेक्षा आज ठंड कुछ कम थी। मार्गवर्ती 'सान बरबड़ा' तथा 'गदाधरपुर' गांव के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। लगभग १२.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर मां तारिणि ठकुराणी महाविद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में 'रहो भीतर, जीओ बाहर।' सूक्त की व्याख्या की तथा सन् २०१७ की सम्पन्नता के संदर्भ में कहा--'सन् २०१७ का अंतिम सूर्योदय हो गया। सूर्यास्त होना अवशेष है। उसके बाद जो सूर्योदय होगा, वह सन् २०१८ का होगा। आज २०१७ का अंतिम सूर्योदय हो गया। समय बीतता है। आत्मालोचन किया जा सकता है कि गत वर्ष में भीतर में रहना हुआ या नहीं? मात्र मोहमयी दुनिया में ही रचे-पचे रहे या मोक्ष की ओर भी आगे बढ़े? मोह में रहना बाहर में रहना होता है और अमोह में रहना भीतर में रहना होता है। मोह है तो मोक्ष नहीं, मोक्ष है तो मोह नहीं। मोह व मोक्ष--दोनों में शाब्दिक दृष्टि से काफी समानता होते हुए भी बहुत बड़ा अंतर है। दोनों एक साथ नहीं रह सकते। मोक्ष की ओर आगे बढ़ना है तो मोह को छोड़ना होगा, भीतर में रहना होगा।'

बेंगलुरु से समागत ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने कव्वाली के द्वारा पुज्यप्रवर की अभ्यर्थना की। गत कल पूज्यप्रवर ने बेंगलुरु से समागत ज्ञानशाला को उपासना का अवसर प्रदान किया। उस समय कई बच्चों ने पूज्यप्रवर से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। समयाभाव के कारण कुछ ज्ञानार्थी अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त करने से वंचित रह गए। आचार्यप्रवर ने आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में उन ज्ञानार्थियों की जिज्ञासाओं के समाधान प्रदान किए। आचार्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात संपूर्ण बेंगलुरु ज्ञानशाला परिवार कृतार्थता की अनुभूति कर रहा था।

नववर्ष के संदर्भ में आज देश भर से विभिन्न क्षेत्रों के लोग पूज्य सन्निधि में पहुंच गए। यह क्रम देर रात तक जारी रहा।

नववर्ष पर उल्लासमय वातावरण में हुआ विशेष मंगलपाठ

१ जनवरी। १ जनवरी २०१८ का प्रारम्भ। नववर्ष का प्रारम्भ। उल्लासमय वातावरण। हालांकि आज नववर्ष के संदर्भ में विशेष मंगलपाठ का समय करीब ११.०० बजे से निर्धारित था, किन्तु विभिन्न क्षेत्रों से समागत सैंकड़ों श्रद्धालु सूर्योदय से पूर्व ही पूज्य सन्निधि में पहुंच गए थे। श्रद्धालुओं ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्यप्रवर ने सूर्योदय के कुछ समय उपरान्त घटगांव से बालीजोड़ी की ओर प्रस्थान किया। नववर्ष पर पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ श्रद्धालुओं के आने का क्रम जारी था। मार्ग में यत्र-तत्र समागत श्रद्धालु पूज्यप्रवर के दर्शन कर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे।

आचार्यप्रवर ने मार्ग में इस क्षेत्र के सुप्रसिद्ध मां तारिणी मंदिर के सम्मुख मंगलपाठ समुच्चारित किया। मां तारिणी को शक्ति और तंत्र के क्षेत्र में ओड़िशा की सबसे प्रमुख देवी माना जाता है। इसके निर्माण के विषय में पृथक्-पृथक् मान्यताएं भले हों, किन्तु प्रतिवर्ष लाखों लोग इस मंदिर में आते हैं। नववर्ष के संदर्भ में आज भी वहां लोगों की कतार लगी हुई थी। कई बसों में आगे की ओर रखे हुए नारियलों के संदर्भ में पूछने पर बताया गया कि इस मार्ग से चलने वाली किसी भी बस के चालक को नारियल दे दिया जाए तो वह इस मंदिर तक पहुंचा देता है।

पूज्यप्रवर राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर २० पर करीब ७.५ कि.मी. का विहार कर बालीजोड़ी स्थित एम. ई. स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

नववर्ष के संदर्भ में विशेष मंगलपाठ और कार्यक्रम का समय करीब ११.०० बजे से १२.१५ बजे तक निर्धारित था। लगभग साढे दस बजे से समायोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में सैंकड़ों-सैंकड़ों श्रद्धालु उपस्थित थे। कार्यक्रम में सर्वप्रथम गत दिनों प्रयाण को प्राप्त साध्वी प्रकाशवतीजी (सिसाय) और साध्वी भाग्यवतीजी (बाव) की स्मृति सभा और उनकी स्मृति में 'चार लोगस्स' के ध्यान का उपक्रम रहा। आज चतुर्दशी का प्रसंग भी था। अतः पूज्यप्रवर ने साधु-साध्वियों की उपस्थिति में हाजरी का वाचन करते हुए मर्यादाओं के प्रति सजग रहने का संबोध प्रदान किया। हाजरी वाचन के उपरान्त साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया।

करीब ग्यारह बजे से विशेष मंगलपाठ और अन्य उपक्रमों का क्रम प्रारम्भ हुआ। पूज्यप्रवर ने प्रयाण गीत 'प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर' का संगान किया। तदुपरान्त करीब ११.११ बजे से सैंकड़ों लोगों ने पूज्यप्रवर से सम्यक्त्व दीक्षा स्वीकार की। उस उपक्रम के पश्चात् त्रिपदी वंदना का क्रम रहा।

परम पावन आचार्यप्रवर ने समुपस्थित जनमेदिनी को नववर्ष का विशेष मंगलपाठ सुनाया और प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'मंगलपाठ को दवा माना जाए तो उसके साथ कोई अनुपान भी होना चाहिए। अनुपान के लिए कोई संकल्प होना चाहिए। इस वर्ष में अर्थात् १ जनवरी से ३१ दिसम्बर २०१८ तक के लिए आप अपने मन से भी कोई अच्छा आध्यात्मिक-धार्मिक संकल्प सोच सकते हैं। मैं आपको उसका त्याग करा सकूंगा। मैं सुझाव के रूप में एक संकल्प आपको बता देता हूं कि प्रतिदिन लगभग दस मिनिट स्वाध्याय करना। वह भले चितारने के रूप में हो अथवा किसी ग्रंथ को पढ़ने के रूप में हो। कभी छूट जाए तो आगे पूर्ति करने का प्रयास करना चाहिए। यह या दूसरा कोई अच्छा संकल्प आप सोच सकते हैं। (आचार्यप्रवर ने समुपस्थित जनता को वर्ष भर के लिए संकल्प का प्रत्याख्यान करवाया।)

मैं उपस्थित और अनुपस्थित सभी लोगों के लिए यह मंगलकामना करता हूं कि हमारा यह वर्ष अच्छा बीते, शांति में बीते, समाधि में बीते। हम जितनी हो सके दूसरों की आध्यात्मिक, निरवद्य, पवित्र सेवा करे, अच्छा श्रम करने का प्रयास करें, यह हम सबके लिए अभिलषणीय है। हम पंच परमेष्ठी को वंदन करते हैं।'

नए वर्ष में जागें और अच्छा कार्य करें

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के मन में मंगल की कामना होती है। वह स्वयं का भी मंगल चाहता है और यथावसर दूसरों को भी मंगलकामना देता है। मंगल भौतिक रूप में भी हो सकता है और आध्यात्मिक रूप में भी हो सकता है। भौतिक मंगल भी अपने आप में आध्यात्मिक मंगल से जुड़ा हुआ है। जिसका आध्यात्मिक मंगल नहीं होता, उसे भौतिक मंगल भी नहीं मिलता अर्थात् भौतिक मंगल की पृष्ठभूमि में आध्यात्मिक मंगल होना जरूरी है, ऐसा मुझे लगता है। मैं तात्त्विक भाषा में बताऊं कि निर्जरा है तो साथ में पुण्य है। निर्जरा के बिना पुण्य का बंध नहीं हो सकता। आध्यात्मिकता है तो ही भौतिकता का मंगल हो सकता है।

धर्म उत्कृष्ट मंगल है, आध्यात्मिक मंगल है। धर्म के तीन आयाम हैं--अहिंसा, संयम और तप। आदमी के भीतर अनुकंपा, करुणा की भावना रहे। वह ध्यान दे कि दूसरों को मेरी ओर से व्यर्थ कष्ट न हो जाए। आदमी यथासंभव आध्यात्मिक रूप में दूसरों का दुःख दूर करने का प्रयास करे। उन्हें चित्त समाधि देने का प्रयत्न करे। यदि वह ऐसा न कर सके तो भी अपनी ओर से किसी को इरादतन रूप में कष्ट पहुंचाने का प्रयास करना ही नहीं चाहिए। अहिंसा को परम धर्म कहा गया है।

आदमी में संयम की साधना भी रहनी चाहिए। मन, वाणी, इन्द्रिय और शारीरिक चेष्टाओं का भी संयम रहना चाहिए। जैसे रेनकोट के कारण वर्षा से बचाव हो सकता है। वैसे ही संयम रूपी कोट के कारण पाप रूपी वर्षा से बचा जा सकता है। संयम एक प्रकार का कवच होता है। आदमी को जीवन में संयम की साधना का अभ्यास करना चाहिए। मन का संयम रहना चाहिए। मन में दुर्विचार न आए। कभी-कभी न चाहते हुए भी मन में दुर्विचार आ सकते हैं। उस समय सर्वप्रथम मन में ये घोषणा करनी चाहिए कि ये विचार मेरे नहीं माने जाएं। इन विचारों को मेरा कोई समर्थन नहीं है। उसके बाद 'नमस्कार महामंत्र', 'ऊँ भिक्षु', 'णमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स' जैसे किसी पवित्र मंत्र का जप शुरू कर देना चाहिए। यदि दुर्विचारों को समर्थन नहीं दिया जाता है और पवित्र मंत्रों का जप किया जाता है तो मानना चाहिए कि फिर वे दुर्विचार ज्यादा प्रभाव नहीं डाल सकेंगे।

आदमी के जीवन में अच्छे संकल्प रहने चाहिए। जीवन में संकल्प एक शक्ति होती है। केवल सपना लेने से क्या होगा। वह सपना जब संकल्प बन जाएगा, तब वह शक्तिशाली बन सकेगा। सपने में दृढ़ता आ गई तो वही संकल्प बन सकता है। संकल्प में शक्ति होती है। आदमी का मनोबल जग जाए, आत्मबल जाग जाए तो वह कठिन कार्य करने के लिए भी सज्जित हो जाता है। संकल्प, मनोबल और आत्मबल के बिना थोड़ी सी कठिनाई को भी पार करना मुश्किल हो सकता है।

आदमी को वाणी का संयम करना चाहिए। जबान पर लगाम रखना अच्छी बात होती है। मुखवस्त्रिका से वाणी संयम की भी प्रेरणा ली जा सकती है। अपेक्षावश हो तो किसी का दिल दुखे, किसी को तकलीफ हो, ऐसी कड़वी बातों को कहने से यथासंभव बचना चाहिए। मुख से व्यर्थ बातें भी नहीं निकलनी चाहिए। वाचालता और अयथार्थ भाषण करने से बचने का प्रयास करना चाहिए।

इन्द्रियों का भी संयम होना चाहिए। पांच इन्द्रियां हैं--श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय। ये पांच इन्द्रियां ज्ञान की साधन हैं तो ये भोग की साधन भी बन जाती हैं। बुरा सुनें नहीं, बुरा देखें नहीं, बुरा बोलें नहीं। बुरी बातों को सुनने के लिए व्यर्थ कान न लगाएं। कोई एकांत बात कर रहा हो तो उसको भी सुनने का प्रयास क्यों करना चाहिए। आगम की वाणी, संतों की वाणी, अच्छे भक्ति गीत सुने जा सकते हैं, किन्तु अनपेक्षित और बुरी बातों के श्रवण में रस नहीं लेना चाहिए। चक्षुरिन्द्रिय संयम के

अंतर्गत अदर्शनीय को नहीं देखने से बचना चाहिए। जीतमुनि का प्रसंग चक्षुरिन्द्रिय के संयम में उदाहृत किया जा सकता है। आदमी को जिह्वा संयम का भी अभ्यास करना चाहिए। शरीर के लिए खाना होता है, किन्तु स्वाद के लिए ज्यादा नहीं खाना चाहिए। घ्राणेन्द्रिय का और स्पर्शनिन्द्रिय का भी संयम होना चाहिए। इस प्रकार पांचों इन्द्रियों का संयम होना चाहिए।

साधु में तो संयम होना ही चाहिए। गृहस्थों में भी इन्द्रियों आदि का संयम होना चाहिए। इन्द्रिय संयम के प्रतीक के रूप में सर्वेन्द्रिय संयम की साधना का प्रयोग बताया जाता है। (पूज्यप्रवर ने प्रायोगिक रूप में सर्वेन्द्रिय संयम मुद्रा का प्रयोग करवाया।) आदमी को शरीर का भी संयम करना चाहिए।

जीवन में तपस्या भी होनी चाहिए। तपोबल पुष्ट रहना चाहिए। नवकारसी एक छोटा-सा तप है। इसके अंतर्गत रात के बारह बजे से सूर्योदय के बाद एक मुहूर्त दिन चढ़े तक चारों आहारों का त्याग रखना होता है। कोई प्रहर भी कर सकता है। प्रहर में भी चारों आहारों का त्याग रखना होता है। पानी पी लिया तो वह तप 'पौरुषी' संज्ञा के योग्य नहीं होता। ये बाह्य तपस्या के कुछ प्रकार हैं। प्रायश्चित्त विनय, वैयावृत्त्य, स्वाध्याय, ध्यान और कायोत्सर्ग आभ्यांतर तप हैं। ये ऐसे प्रयोग हैं, जो पूर्वार्जित पाप कर्मों का निर्जरण करवाते हैं। जिस आदमी का मन अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म में सदा रमा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

नया वर्ष प्रारम्भ हुआ है। इस वर्ष में हम अहिंसा को परिपुष्ट बना सकें, संयम को संपोषित कर सकें और तप को मजबूत बना सकें तो यह वर्ष हमारे लिए मंगलमय हो सकेगा। वर्ष तो आता है और चला जाता है। जो एक वर्ष से अधिक उम्र वाले लोग हैं, उनके जीवन का एक वर्ष चला जाता है। मानों जिन्दगी के खजाने में एक वर्ष की रिक्तता हो जाती है। जो वर्ष चला जाता है, वह वापस नहीं आता। धर्म करने वाले का वर्ष सफल और अधर्म करने वाले का वर्ष अफल हो जाता है।

नववर्ष के प्रति जिसके मन में उत्साह है, वह यह सोचे कि गत वर्ष में अच्छा कार्य क्या किया। हमारे बालमुनि यह सोचें कि एक वर्ष में कितना अध्ययन किया। अभी कुछ दिन पहले इनकी परीक्षाएं भी हुई हैं तो मानना चाहिए कि गत वर्ष में आगे बढ़ने वाले कुछ आगे बढ़े हैं। गुरुकुलवासी छोटी साध्वियां और बहिर्विहार में विहरण कर रहीं गत कुछ वर्षों की दीक्षित साध्वियां और समणियां यह सोचें कि नया ज्ञानार्जन किया या नहीं? बेंगलुरु से समागत ज्ञानशाला के बच्चे भी यह सोचें कि सन् २०१७ में ज्ञानशाला में जाकर कितना विकास किया? अन्य स्थानों पर भी जगह-जगह चलने वाली ज्ञानशालाओं के प्रशिक्षक/प्रशिक्षिकाएं और ज्ञानार्थी भी ध्यान दें कि एक साल में कितने आगे बढ़े?

इस प्रकार ध्यान देना चाहिए कि १ जनवरी २०१७ को जहां थे, आज वहीं हैं या विकास किया है, या किसी ने ह्रास किया है। अच्छी बात में ह्रास नहीं, विकास होना चाहिए। गलत बातों का ह्रास होना चाहिए। आदमी यह ध्यान दे कि २०१७ में क्या पाया और क्या खोया? वह सन् २०१७ का वर्ष चला गया और सन् २०१८ का वर्ष प्रारम्भ हो गया है। इस वर्ष में जागें और अच्छा कार्य करें।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'परम पूज्य आचार्यप्रवर से बृहत् मंगलपाठ का श्रवण कर हमने इस वर्ष का प्रारम्भ किया। गुरुदेव के पवित्र आभामंडल में हमने गत वर्ष को आनंद के साथ बिताया। अब सन् २०१८ का वर्ष आज प्रारम्भ हो गया है। हमारे जीवनकाल का एक वर्ष और कम हो गया। अब यह चिन्तनीय है कि हमने गत वर्ष में क्या किया और इस वर्ष में हमारे लिए क्या करणीय है। जीवन में कुछ नया नहीं आएगा तो नववर्ष का हमारे जीवन में क्या महत्त्व रहेगा? हम नए वर्ष में कुछ अच्छा और नया करें तो जिन्दगी और बेहतरीन बन सकती है। अतीत की यादों और भविष्य की चिंताओं के बोझ को लेकर यदि नए वर्ष में प्रवेश होगा तो इस नववर्ष का आनंद टिकाऊ नहीं रहेगा। यह पूरा वर्ष

आनंदमय बने, इसके लिए कुछ नया सोचना और नया करना चाहिए। इस वर्ष में आप निषेधात्मक भावों से निकल कर साकारात्मक भावों में जीना सीखें। जैन दर्शन के अनुसार अठारह पाप निषेधात्मक भाव हैं। वे आपके भीतर न आएं, यह ध्यातव्य है। इसके लिए मैं यह सुझाव देना चाहूंगी कि अठारह पापों के बारे में आचार्यप्रवर के प्रवचनों की एक पुस्तक है--'१८ पाप'। आप लोग इसका स्वाध्याय कर अपने आपको निषेधात्मक भावों से बचाने का प्रयास करें। यदि इस वर्ष में निषेधात्मक भावों से बचने का प्रयास होगा तो यह साल बहुत आनंददायी बन सकेगा।' साध्वीप्रमुखाजी ने नववर्ष के संदर्भ में स्वरचित नई कविता भी प्रस्तुत की।

कार्यक्रम के दौरान ओड़िशा के शिक्षामंत्री श्री बद्री कात्रे ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीष प्राप्त की। उन्होंने पूज्यप्रवर द्वारा उच्चरित नववर्ष का विशेष मंगलपाठ भी सुना। जैन विश्वभारती, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, प्रेक्षा इन्टरनेशनल और तेयुप जलगांव द्वारा पृथक-पृथक रूप में प्रकाशित सन् २०१८ के कैलेंडर पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किए गए। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा नवीनीकृत वेबसाइट, नवनिर्मित एप तथा नशामुक्ति के संदर्भ सोश्यल मीडिया पर प्रचार-प्रसार आदि से संबंधित उपक्रम लोकार्पित किए गए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

कार्यक्रम का सीधा प्रसारण पारस चैनल पर किया गया। जिससे देश-विदेश में स्थित संभवतः हजारों-हजारों श्रद्धालु पूज्यप्रवर के मुखारविन्द से उच्चरित नववर्ष के विशेष मंगलपाठ और पावन प्रवचन से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर की यात्रा इन दिनों वन्य क्षेत्र में हो रही है। आसपास में श्रद्धा के क्षेत्र प्रायः नहीं हैं, किन्तु हिन्दुस्तान के विभिन्न क्षेत्रों के सैंकड़ों श्रद्धालु नववर्ष के संदर्भ में पूज्य सन्निधि में पहुंच कर लाभान्वित हुए। पूज्यप्रवर के पदार्पण से मानों जंगल में भी मंगल हो गया।

शासनश्री साध्वी प्रकाशवतीजी और शासनश्री साध्वी भाग्यवतीजी की स्मृति सभा

गंगाशहर सेवाकेन्द्र में स्थित शासनश्री साध्वी प्रकाशवतीजी (सिसाय) का २६ दिसम्बर तथा बीदासर समाधिकेन्द्र में स्थित शासनश्री साध्वी भाग्यवतीजी (बाव) का ३० दिसम्बर को अनशनपूर्वक प्रयाण हो गया। आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में उनकी स्मृति सभा का उपक्रम भी रहा।

साध्वीद्वय के विषय में उद्‌गार व्यक्त करते हुए परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कहा--'प्राप्त जानकारी के अनुसार साध्वी प्रकाशवतीजी संसारपक्ष में सिसाय के अग्रवाल परिवार से संबद्ध थी। विक्रम संवत् २०१० में करीब अठारह वर्ष की अवस्था में उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव तुलसी से साध्वी दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के बाद करीब दस वर्षों तक वे मातुश्री वदनांजी की सेवा में रहीं। तदुपरान्त वे साध्वी पिस्तांजी (उमरा) के साथ रहीं। साध्वी पिस्तांजी के प्रयाण के बाद उन्हें अग्रगण्य नियुक्त किया गया। उन्होंने साध्वी संतोकांजी को पड़िहारा से रतनगढ़ तक कंधों पर उठा कर लाने में तथा मातुश्री वदनांजी को सुखपाल द्वारा बीदासर से लाडनूं लाने में सहयोग किया। मैंने उन्हें 'शासनश्री' संबोधन से संबोधित किया। विगत कुछ वर्षों से वे गंगाशहर सेवाकेन्द्र में स्थित थीं। उन्होंने विक्रम संवत् २०७४ पौष कृष्णा अमावस्या तदनुसार १८ दिसम्बर २०१७ को सायंकाल करीब ५.०६ बजे तिविहार अनशन और पौष शुक्ला नवमी तदनुसार २७ दिसम्बर २०१७ को रात्रि ८.४४ बजे चौविहार अनशन ग्रहण किया। पौष कृष्णा एकादशी को अपराह्न करीब ३.२५ बजे गंगाशहर में उनका प्रयाण हो गया। वे गुरुदेव तुलसी के चरणों में आईं, शासन की सेवा की, शासन से सेवा ली और आखिर विदा हो गईं।

साध्वी भाग्यवतीजी का जन्म बाव के परीख परिवार में हुआ। विक्रम संवत् २०१५ में उन्होंने अपने पति को छोड़कर परम पूज्य गुरुदेव तुलसी से दीक्षा स्वीकार की। तेरापंथ धर्मसंघ में बाव से दीक्षित होने

वाली वे प्रथम साध्वी थीं। दीक्षा के बाद वे साध्वी अणचांजी (श्रीडूंगरगढ़), साध्वी धनकंवरजी (राजलदेसर), साध्वी केसरजी (रतनगढ़) और साध्वी किस्तूरांजी (राजलदेसर) के साथ रहीं। स्व. मुनिश्री वर्धमानजी स्वामी, मुनि अभिजितकुमारजी, मुनि जागृतकुमारजी, साध्वी ऋजुप्रज्ञाजी और साध्वी गुणप्रभाजी की वे संसारपक्षीय ज्ञाति साध्वी थीं। विक्रम संवत् २०४० में उन्हें अग्रगण्य के रूप में नियुक्त किया गया। सन् २०१३ में बाव अक्षय तृतीया के अवसर पर मैंने उन्हें 'शासनश्री' के रूप में संबोधित किया। गत कुछ अर्से से वे बीदासर समाधिकेन्द्र में प्रवासित थीं। उन्होंने विक्रम संवत् २०७४ पौष कृष्णा नवमी तदनुसार २८ दिसम्बर को पश्चिम रात्रि में करीब ३.४७ बजे तिविहार तथा पौष कृष्णा दसमी को मध्याह्न लगभग १२.३५ बजे चौविहार अनशन ग्रहण किया। पौष शुक्ला द्वादशी को प्रातः करीब ७.१० बजे बीदासर में वे काल धर्म को प्राप्त हो गईं।

साध्वीद्वय के प्रति हमारी मंगलकामना है कि उनकी आत्माएं और उत्थान को प्राप्त हों। साध्वी प्रकाशवतीजी के पास साध्वी दीपमालाजी और साध्वी भाग्यवतीजी के पास साध्वी ऋजुप्रज्ञाजी थीं। उन्हें सेवा का बहुत अच्छा अवसर मिला और भी सेवादायी साध्वियों को सेवा का अवसर प्राप्त हुआ।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने इस संदर्भ में कहा--'साध्वीश्री प्रकाशवतीजी और साध्वीश्री भाग्यवतीजी दोनों ही हमारे धर्मसंघ की अग्रगण्य साध्वियां थीं। साध्वीश्री प्रकाशवतीजी हरियाणा से थीं। जब वे चौदह वर्ष की हुईं तो हरियाणा की उस समय की प्रथा के अनुसार उनका विवाह पक्का कर दिया गया। जब उन्हें इस बात का पता चला तो उनकी धड़कन बढ़ गई। उन्हें मौत दिखाई देने लग गई। क्योंकि उनकी सात बुआएं शादी के कुछ समय पश्चात दिवंगत हो गई थीं। उन्होंने सोचा कि शादी के बाद मेरी भी उनकी तरह मौत होने वाली है। उस समय उनके मन में वैराग्य नहीं था। संयोगवश गुरुदेव तुलसी का विक्रम संवत २००७ का चतुर्मास हांसी में हुआ। उस समय उन्हें गुरुदेव की उपासना में बैठने व साध्वियों की सेवा का अवसर मिला। उसके बाद गुरुदेव का सिसाय पधारना हुआ। वहां उनकी भावना बदली और वैराग्य जागृत हो गया। उन्होंने अपने परिवार वालों से कह दिया कि मुझे शादी नहीं करनी, मुझे तो दीक्षा लेनी है।

उसके बाद वे पारमार्थिक शिक्षण संस्था में कुछ वर्षों तक रहीं और संभवतः जोधपुर चतुर्मास में उनकी दीक्षा हुई। उनकी दीक्षा के बाद गुरुदेव मुम्बई यात्रा में पधार रहे थे तो उन्हें मातुश्री वदनांजी की सेवा में रखा गया। लगभग दस वर्षों तक वे उनकी सेवा में रहीं और मनोयोग से उनकी सेवा की। मातुश्री की सेवा में रहने वाली साध्वियां आगम स्वाध्याय बहुत करती थीं, कंठस्थ करती थीं। वहां साध्वीश्री प्रकाशवतीजी को भी आगम सीखने की प्रेरणा मिली। दस वर्ष बाद साध्वीश्री पिस्तांजी महासतियांजी (उमरां) के सिंघाड़े में उन्हें रखा गया और जब तक वे जीवित रहीं, साध्वीश्री प्रकाशवतीजी उनके साथ रहीं, उनकी बहुत अच्छी सेवा की और उनको संथारा भी करवाया। उनके प्रयाण के बाद साध्वीश्री प्रकाशवतीजी ने अनेक वर्षों तक अग्रगण्य के रूप में विचरण किया। धर्मसंघ के प्रति और गुरु के प्रति उनका अच्छा समर्पण भाव था। गुरुदेव ने उनकी सेवा पर विशेष ध्यान दिया। सामान्यतया अग्रगण्य साध्वियों को बीदासर समाधिकेन्द्र में रखा जाता है, किन्तु उनकी भावना थी कि मुझे गंगाशहर में रखा जाए। गुरुदेव ने कृपा कर उन्हें गंगाशहर सेवाकेन्द्र में रखा। उन्होंने अपनी जीवन यात्रा अनशनपूर्वक सम्पन्न की। अब उनकी चेतना ऊर्ध्वारोहण करती रहे, यह कामना है।'

साध्वीश्री भाग्यवतीजी के साथ मुझे पारमार्थिक शिक्षण संस्था में रहने का मौका मिला। वे बाव की प्रथम साध्वी थीं अर्थात् तेरापंथ के आठ आचार्यों तक बाव से किसी भी साध्वी की दीक्षा नहीं हुई थी। उन्हें सबसे पहले यह अवसर प्राप्त हुआ। वे जब बालावस्था में थीं, तब उनकी मां का देहांत हो गया। उनके मन में वैराग्य भावना तो थी, किन्तु कुछ बाधा आ गई। मुम्बई में उन्होंने गुरुदेव से प्रार्थना भी की, किन्तु उनकी

दीक्षा नहीं हो सकी। कुछ ऐसा संयोग हुआ कि उनकी शादी भी हो गई। शादी के बाद भी उनका मन घर-परिवार में नहीं लगा। उनकी सास का उन्हें अच्छा धार्मिक सहयोग मिला और कुछ महीनों बाद ही उनको दीक्षा की अनुमति प्राप्त हो गई। उसके बाद साध्वियों के संपर्क से उनका वैराग्य पुष्ट होता रहा। फिर वे पारमार्थिक शिक्षण संस्था में रहीं।

मैंने देखा कि साध्वीश्री भाग्यवतीजी बहुत उद्यमी साध्वी थीं। बुद्धि का क्षयोपशम उनका संभवतः कुछ कम था, किन्तु वे दिन-रात उद्यम करती थीं। कालुकौमदी सीखना उनके लिए कुछ कठिन था, किन्तु उसके लिए वे सतत प्रयत्न करती रहती थीं। उन्होंने भी वर्षों तक अपनी अच्छी साधना कीं। वे साध्वीश्री अणचांजी, साध्वीश्री धनकंवरजी के साथ रहीं। साध्वी कस्तूरांजी (राजलदेसर) के अंतिम समय में उन्होंने उनकी बहुत सेवा की। बाद में साध्वी भाग्यवतीजी को अग्रगण्य बनाया गया तथा अस्वस्थ होने के बाद गुरुदेव ने कृपा कर उनको बीदासर समाधिकेन्द्र में रखा। वहां उन्होंने अपनी जीवन यात्रा जागरूक स्थिति में अनशनपूर्वक सम्पन्न की है। उनके प्रति यही मंगलभावना है कि उनकी आत्मा वीतरागता की दिशा में उत्तरोत्तर गति-प्रगति करती रहे।'

पूज्यप्रवर के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने साध्वीद्वय की स्मृति में चार लोगस्स का ध्यान किया। मुनि अक्षयप्रकाशजी ने साध्वी भाग्यवतीजी (बाव) के संदर्भ में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आज क्योंझर जिला की सब कलक्टर पारुल पटावरी ने पूज्यप्रवर का दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। ज्ञातव्य है कि वे जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज से संबद्ध हैं।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा को भेंट

५१०००/- किशनलाल देवेन्द्रकुमार भूपेन्द्रकुमार डागलिया, कोशीवाड़ा-मुम्बई।

५१०००/- स्व. सरोजदेवी बेताला (धर्मपत्नी हंसराज बेताला) की पुण्य स्मृति में टीकमचंद महावीरचंद हंसराज राजेश अभय अनिल अमृत सुयश बेताला (छोटी खाटू-भागलपुर)।

५१०००/- विनोद अरिहंतकुमार बैद, छापर-कोलकाता।

५१०००/- संपतराज ज्ञानचंद आंचलिया, सिरकाली-चेन्नई।

५१०००/- श्रीमती संपतदेवी विनोद दीपक लुणिया, सरदारशहर-कोयम्बत्तूर।

५१०००/- आचार्यश्री महाश्रमणजी के ओड़िशा पदार्पण के सुअवसर पर गुलाबदेवी प्रफुल्ल बेताला,कटक।

५१०००/- भागचंद प्रवीण कुमार बरड़िया, लाडनूं।

५१०००/- अमरचंद धर्मचंद लुंकड़, राणावास-चेन्नई।

५१०००/- संचियालाल करणीसिंह प्रकाश संयम पीयूष अमन बरड़िया, हैदराबाद-चेन्नई-दिल्ली-सरदारशहर।

५१०००/- माणकचंद राजूदेवी जितेन्द्र पुगलिया, श्रीडूंगरगढ़-कोयम्बत्तूर।

५१०००/- रतनलाल नरेन्द्र कुमार नखत, सरदारशहर-ईरोड।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapati@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth तथा मोबाईल एप www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला